Vol.2, No. 2 (April 2013) P. 1-7

Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

तबला–संगत के आदर्श पुरूष ''पं. ईश्वर लाल मिश्र'

कृतानन्द पाण्डेय
शोध छात्र, वाद्य–विभाग
संगीत एवं मन्च कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
Email: kritanandpandey@gmail.com

(श्रद्धेय गुरुदेव पं० ईश्वर लाल मिश्र)

संगीत एक अद्भुत कला है। यह हृदय की भाषा है। 'स्वर एवं लय' संगीत के मुख्य दो उपकरण है। स्वरों से रागों की रचना हुई और लय से ताल की। गायन, वादन एवं नृत्य तीनों को समन्वित रूप से आधार प्रदान करना 'ताल' का कार्य है। वर्तमान समय में ताल का प्रमुख साधन 'तबला' अवनद्ध वाद्यों में सबसे लोकप्रिय तालवाद्य है। तबले का इतिहास हमारे देश के लिए अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। हमारे देश में अनेक मूर्धन्य तबला वादक पैदा हुए है। बनारस घराने ने तो पुरातन काल से उद्भट तबला वादकों की एक श्रृंखला कायम कर रखी है। उसी गौरवशाली श्रृंखला की कड़ियों में विश्वविख्यात तबला वादक, वरिष्ठ गुरू एवं तबला–संगत के आदर्श पुरूष पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी हैं।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी, निर्मल, संतहृदय तबला वादक पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी तबला वादन के क्षेत्र की एक ऐसी दिव्य ज्योति है जिनके समक्ष वाणी मूक हो जाती है एवं मस्तक स्वयं श्रद्धावनत हो जाता है।

ताल के इस महर्षि का जन्म 01 अगस्त सन् 1944 ई0 को वाराणसी के रामापुरा मोहल्ले में एक संगीतकार परिवार में हुआ। पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी अपने परिवार के छठवें पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपके परिवार में एक से बढ़कर एक विद्वान कलाकार हुए है, जैसे– सुप्रसिद्ध सारंगी वादक पं0 नवरत्न मिश्र, पं0 बचाऊ मिश्र, पं0 बंशी महाराज, पं0 बच्चा लाल मिश्र और पं0 लक्ष्मी प्रसाद मिश्र आदि।

पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी के पिताजी पं0 दाऊ जी मिश्र बनारस घराने के प्रख्यात गायक थे। पं0 जी की माता का नाम श्रीमती रामादेवी मिश्रा था। आपने सर्वप्रथम अपने पिताजी से गायन की शिक्षा प्राप्त करनी प्रारम्भ की। तत्पश्चात् 4 वर्ष की अल्पायु में ही इनके पिताजी ने इन्हें देश के अद्वितीय तबला वादक बनारस घराने के प्रातः स्मरणीय 'ना धिं धिं ना' के जादूगर पं0 अनोखेलाल मिश्र जी से गुरू शिष्य परम्परा के अन्तर्गत शिष्यता ग्रहण करवा दिया। तब से आप उनके जीवनपर्यन्त, गुरू के श्री

चरणों में बैठकर पूरी लगन, कठोर अनुशासन तथा कठिन परिश्रम के साथ तबला वादन की शिक्षा ग्रहण करते रहे। तबला संगत की विशेष शिक्षा इन्होंने बनारस घराने के सुप्रसिद्ध गायक पं0 महादेव प्रसाद मिश्र जी से ली। 17 जनवरी सन् 1964 ई0 को पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी की शादी श्रीमती मीरादेवी मिश्रा जी से हुई जो कि पड्रौना के ध्रुपद घराने के पं0 राम प्रसाद मलिक जी के परिवार से सम्बन्धित है। बनारस घराने के महान

पं० ईश्वर लाल मिश्र, भारत रत्न पं० रविशंकर जी के साथ बीजिंग (चीन) में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए (1983)

एवं अविस्मरणीय तबला वादक पं0 अनोखेलाल मिश्र जी एवं पं0 महादेव प्रसाद मिश्र जी के यशस्वी एवं पथगामी शिष्य पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी को बाल्यावस्था से ही गुरू का सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं पुत्रवत् स्नेह मिला। गुरू कृपा, पुत्रवत् स्नेह, दृढ़ संकल्प एवं सच्ची लगन पूर्वक निरन्तर अभ्यास ने अपना अनोखा ही रंग दिखाया और कम ही समय में आपकी गिनती देश के श्रेष्ठ तबला वादकों में होने लगी। बचपन से ही आपकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र रही है। किसी भी बन्दिश या रचना को एक बार सुनने के बाद वह बन्दिश या रचना आपको कण्ठस्थ हो जाती है एवं तबला संगत करते समय मुख्य कलाकार चाहे वह गायक हो, वादक हो या नर्तक हो उसके एक–एक अन्दाज को आप अपने तबले पर तुरन्त उतार कर प्रस्तुत कर देते है।

समर्पण एवं त्याग की प्रतिमूर्ति, पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी के मिजाज में सादगी कूट–कूट कर भरी है। सौम्य, विनीत, बहुत ही अपनेपन के साथ सबसे मिलने वाले, सबका भला सोचने एवं करने वाले सन्त स्वभाव के पं0 जी को आज सब लोग 'गुरूजी' के नाम से जानते हैं। आपके घर में बैठक प्रवेश करते ही किसी देवालय का दिव्य आभास स्वतः होने लगता है। बैठक के बगल में ही इनका पूजा–कक्ष पड़ता है। पूरा कक्ष ही देवी–देवताओं एवं ऋषि–महात्माओं के तस्वीरों से सुशोभित है। वे प्रतिदिन अपने आराध्य देवों, माता–पिता एवं गुरूजनों का आवाह्न करते हुए कुछ क्षण के लिए उनमें लीन हो जाते हैं।

आपकी तबला संगति से जहां एक ओर कोई नवोदित कलाकार धैर्य एवं साहस के साथ चैन से अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकता है, वही दूसरी ओर देश का कोई भी प्रतिष्ठित एवं स्थापित कलाकार एक चमत्कारपूर्ण एवं मन्त्रमुग्ध करने वाले प्रस्तुतिकरण का सौभाग्य प्राप्त करता हैं। संगीत के अन्तर्निहित भावों को आत्मसात् कर उसके अनुसार विलम्बित से लेकर द्रुत लय तक साथ देकर आत्मा के दिव्य सौन्दर्य से साक्षात्कार करा देना ही आपकी संगत की विशेषता है। गायन के साथ तबला संगत करते समय ऐसा लगता है कि आपका तबला स्वयं गा रहा है। मधुर और स्पष्ट वादन करना एवं उपज तथा तिहाई का काम इनके वादन की सबसे बड़ी विशेषता है। आप किसी भी ताल में किसी भी मात्रा से

उपज करके खुबसूरत तिहाई बनाकर सम पर बड़ी सहजता से आ जाते है जो कि बहुत मुश्किल काम है। यही इनके वादन एवं संगत की सबसे बड़ी विशेषता है। एक से एक खुबसूरत बन्दिशों की रचना करना भी आपकी एक विशेषता है।

पं० ईश्वर लाल मिश्र जी के तबला वादन की सर्वाधिक विशेषता तैयारी तो है ही साथ ही बोलों की स्पष्ट निकास, वजन और माधुर्य भी है। उनके बोलों में जहां टप–टप पड़ती बूंदों की सी नरमी है तो वहीं बादलों की गर्जना भी है। तबले की कठिन बन्दिशों को समुचित वजन के साथ आसानी से प्रस्तुत करना आपके वादन की सर्वाधिक विशेषता है। आपके पास तबला वादन शैली की प्राचीन बन्दिशों में विशेषकर बांट, कायदा, टुकड़ा, परन, गत एवं फरदों का विशाल संग्रह है। स्वतन्त्र वादन एवं तबला संगत करते समय उपज तिहाईयों एवं कठिन लयकारियों का सुगम प्रस्तुतिकरण आपके वादन की विशेष प्रतिभा है। तबला संगत करते समय आप परम्परा का बहुत ध्यान रखते है एवं ठुमारी के साथ संगत करते समय बढ़त की लय में आप बहुत ही खुबसूरत एवं पुरानी–पुरानी परम्परागत लग्गी–लड़ी का प्रयोग करते है जो कि सुनने में अत्यन्त आकर्षक लगती है। आप संगत करते समय मुख्य कलाकार के (गायन, वादन एवं नर्तन के) अनुरूप संगत करते है। यहीं कारण है कि संगीत के तीन विधाओं चाहे वह गायन हो, वादन हो या नर्तन हो चोटी के कलाकार आपकी संगत को सबसे ज्यादा पसन्द करते है एवं आपके साथ अपना ज्यादातर कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहते है। इन्हीं सभी विशेष गुणों के कारण संगीत जगत में स्वतन्त्र वादन के साथ–साथ तबला संगत के विशेष अंदाज के कारण आपको तबला संगत का आदर्श पुरूष माना जाता है। आपने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंचों, शिक्षण संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों में वरिष्ठ एवं सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ तबला–वादन एवं अध्यापन के माध्यम से बनारस का एवं भारत का गौरव बढ़ाया है।

पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी ने अपना प्रथम कार्यक्रम 12 वर्ष की अल्प अवस्था में देश के सुप्रसिद्ध बाँसुरी वादक पं0 पन्नालाल घोष जी के साथ स्वामी विवेकानन्द जी के जयन्ती समारोह के अवसर पर रामकृष्ण मिशन, वाराणसी में दिया। तत्पश्चात् आपने भारत के विश्वप्रसिद्ध कलाकारों के साथ भारत एवं विदेशों में अपने तबला वादन की अनेकों अत्यन्त सफल एवं मनोहरी प्रस्तुतियाँ दी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संगीत एवं मन्च कला संकाय में आपने 3 सितम्बर 1964 को पदभार ग्रहण किया। आपने एक लम्बे समय तक अवकाश ग्रहण करने तक सफल तबला वादक के रूप में यहाँ पर शिक्षण कार्य किया। विश्वविद्यालय के अतिरिक्त आपने अपने घर पर भी निजी रूप से विद्यार्थियों को तबले की तालीम दी तथा अभी भी देते है। आपके तबला सिखाने का तरीका भी बहुत अद्भुत है। आप बहुत ही कम समय में विद्यार्थियों को आसानी से तैयार कर देते है। इनके सभी शिष्य देश एवं विदेशों में अपने प्रस्तुतिकरण से बनारस घराने की परम्परा को आगे बढ़ा रहे है।

पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी सन् 1970, 1974 एवं 1976 ई0 में अमेरिका के पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर/कलाकार रहे। यहां पर आपने सुप्रसिद्ध विचित्र वीणा और सितार वादक पं0 लालमणि मिश्रा जी के साथ अपनी अनेक सफल एवं आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी।

सन् 1972 ई0 में आप भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद (ICCR) की तरफ से रूस तथा जर्मनी गये। सन् 1977 ई0 में आपने सुप्रसिद्ध वायलीन वादिका डॉ0 एन0 राजम जी के साथ पुनः इन देशों का भ्रमण किया और कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

सन् 1983 ई0 में आपने ICCR की तरफ से विश्वविख्यात सितारवादक भारत रत्न पं0 रविशंकर जी के साथ चीन की यात्रा की। इसके दो वर्ष पश्चात् सन् 1985 ई0 में आपने पं0 रविशंकर जी के साथ ही यूनाईटेड स्टेट ऑफ अमेरिका में तबला वादन की सफल प्रस्तुति दी। सन् 1995 ई0 में पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी पुनः अमेरिका में अतिथि कलाकार एवं विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में टेक्सास विश्वविद्यालय में कार्य किया तथा अपना कार्यक्रम उ0 अली अकबर खाँ (सरोद), उ0 सुजात खाँ (सितार) एवं प्रो० स्टीवेन स्लावक के साथ दिया। पं0 रविशंकर जी के साथ पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी सन् 1980 से 1985 ई0 तक लगातार एक तबला संगतकार एवं पारिवारिक सदस्य के रूप में जुड़े रहे। इन अवधि में पं0 जी के लगभग ज्यादा कार्यक्रम पं0 ईश्वर लाल मिश्रा जी के साथ ही हुए। पं0 रविशंकर जी के साथ आपका अत्यन्त निकट सम्बन्ध था।

आपने संगीत की तीनों विधाओं (गायन, वादन एवं नृत्य) के चोटी के कलाकारों के साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मन्चों पर सफल और अद्वितीय तबला संगत किया, जिसमें गायन के क्षेत्र में– पं0 महादेव प्रसाद मिश्र, श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, श्रीमती गिरजा देवी, पं0 ओंकार नाथ ठाकुर, पं0 विनायक राव पटवर्धन, भारत रत्न पं0 भीमसेन जोशी जी, उस्ताद अमीर खाँ, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, पं0 जसराज, उ0 निसार हुसैन खाँ, उ0 सलामत अली खा, पं0 सियाराम तिवारी, पं0 रामचतुर मलिक, प्रो0 एम0आर0 गौतम, विदुषी किशोरी अमोनकर, श्रीमती लक्ष्मी शंकर एवं श्रीमती निर्मला देवी इत्यादि है।

वादन के क्षेत्र में– भारत रत्न पं0 रविशंकर जी, उस्ताद अली अकबर खाँ, उ0 अमजद अली खाँ, पं0 निखील बनर्जी, उ0 रईस खाँ, पं0 हरी प्रसाद चौरसिया, पं0 शिव कुमार शर्मा, पं0 वी0जी0 जोग, पं0 गजानन राव जोशी, श्री एम0एस0 गोपाल कृष्णन, उ0 अलीम जाफर खाँ, प्रो0 राधिका मोहन मोईत्रा, पं0 लालमणि मिश्रा, उ0 बिस्मिल्लाह खाँ, उ0 शाहिद परवेज, पं0 बुद्धदेव दास गुप्ता, पं0 बुद्धादित्य मुखर्जी एवं पं0 विश्वमोहन भट्ट इत्यादि है।

कर्नाटक हिन्दुस्तानी युगलबन्दी कार्यक्रम में– प्रो0 टी0 एन0 कृष्णन, पं0 टी0वी0 गोपाल कृष्णन, पं0 उमयालपुरम काशी शिवरमन (मृदंगम्), प्रो0 वी0के0 वेंकटरामानुजम (वायलीन), त्रिचीराघवन (मृदंगम), एस0आर0 कन्नण (कर्नाटकी गायन) इत्यादि है।

कथक नृत्य के क्षेत्र में– श्रीमती सितारा देवी, चौबे महाराज, रोशन कुमारी, पं0 मोहन कृष्ण, श्रीमती गीतांजली लाल, श्रीमती शोभना नारायण इत्यादि है।

इन सभी कलाकारों और दर्शकों को पं0 ईश्वरलाल मिश्र जी ने अपने भावपूर्ण वादन से प्रभावित एवं भाव–विभोर किया। पं0 जी कहते है कि– ''सफल तबला वादक बनने के लिए मात्र तबला सीखना ही पर्याप्त नहीं होता। तबला वादक के लिए शेष सांगीतिक विधाओं की भी जानकारी जरूरी होता है।

क्योंकि तबला पूरक वाद्य भी है और संगत वाद्य भी। यह केवल मात्रा गिनने और सम दिखलाने तक ही सीमित नहीं रहता, इस पर किसी भी सांगीतिक कला की सफलता निर्भर करती है। हम कलाकार की प्रस्तुति को पूर्णता प्रदान करते हुए उसमें रस का संचार करते है क्योंकि हमें मालूम है कि कब, कहां, किसके साथ किस अन्दाज में क्या बजाना है।''

स्वतन्त्र तबला वादन प्रस्तुत करते हुए पं० ईश्वर लाल मिश्र

आप आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के 'ए' श्रेणी के कलाकार है एवं 'अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन' आकाशवाणी संगीत सभाओं तथा नेशनल प्रोग्राम में काफी समय से निरन्तर भाग ले रहे है। आपके कार्यक्रम देश के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित होते रहे है। अपने तबला वादन से आपने देश के जिन प्रतिष्ठित संगीत समारोहों को सुशोभित किया है, उनमें प्रमुख है– संकट मोचन संगीत समारोह, गंगा महोत्सव, पं0 रविशंकर द्वारा आयोजित 'रिम्पा' फेस्टिवल, पटना संगीत समारोह, विष्णु दिगम्बर जयन्ती (दिल्ली), सवाई गान्धर्व संगीत समारोह, तानसेन संगीत समारोह, हरबल्लभ संगीत समारोह, हरिदास संगीत सम्मेलन, प्रयास संगीत समिति द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन, त्यागराज फेस्टिवल, नाद वन्दना म्यूजिक फेस्टिवल, संगीत नाटक आकादमी, श्रुति फाउण्डेशन मुम्बई, इन्दौर संगीत सम्मेलन, पं0 ओंकार नाथ ठाकुर मेमोरियल फाउण्डेशन फॉर म्यूजिक, उ0 अलाउद्दीन संगीत समारोह, म्यूजिक एकेडमी (चेन्नई), सप्तक संगीत समारोह, पं0 उदयशंकर संगीत समारोह (1984, नई दिल्ली), कथक समारोह नई दिल्ली और इलाहाबाद विश्वविद्यालय संगीत सम्मेलन इत्यादि।

इन सभी समारोहों के अन्तर्गत आपने लखनऊ, पटना, बंगलौर, हैदराबाद, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, नागपुर, मुम्बई, पुणे, ग्वालियर, इन्दौर, उदयपुर, भोपाल, खैरागढ़, जालन्धर, जबलपुर, गोरखपुर, रीवा, रायपुर, जम्मू, अल्मोड़ा, डिब्रुगढ़, अहमदाबाद, इलाहाबाद, मैहर, गुवाहाटी, चण्डीगढ़, कानुपर, इम्फाल आदि स्थानों पर अनेक बार भारत भ्रमण कर संगीत की सेवा की।

सन् 2001 ई0 में पं0 ईश्वर लाल मिश्र जी को उनके संगीत जगत में अतुलनीय योगदान हेतु उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त भी आपको अनेक उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है, जैसे– 'ताल मणि', 'ताल विलास', 'संगीत श्री', 'पं0 विक्कू महाराज संगीत सम्मान' इत्यादि। आपके तबला–संगति व स्वतन्त्र वादन की एल0पी0, ई0पी0, कैसेट, वी0सी0डी0, सी0डी0 व डी0वी0डी0 भी उपलब्ध है।

आपने अपने अक्षय संगीत कोष से अनेक योग्य शिष्यों को मुक्त हस्त से संगीत विद्या का महादान देकर विपुल यश अर्जित किया है। देश–विदेश में आपके अनेकों शिष्य अपने तबला–वादन से

ख्याति अर्जित करके आपके गौरव में वृद्धि कर रहे है। (इस आलेख के लेखक को भी पं0 जी के प्रिय शिष्य बनने का गौरव प्राप्त है) आपके शिष्यों की लम्बी श्रृंखला है। उनमें से कुछ प्रमुख नाम है– श्री काशीनाथ मिश्र, श्री पुण्डलिक कृष्ण भागवत, ज्ञानेन्द्र, पुर्णेन्दु, धनंजय कुमार मिश्रा (पुत्र), दीपक मिश्रा, संजय मिश्रा, संदीप भट्टाचार्य, कृतानन्द पाण्डेय, आमत फ्रेडरिक (फ्राँस), स्टीवेन स्लावेक (अमेरिका), स्टीव (स्वीट्जरलैण्ड), एरियल (इजराइल), पॉल (इजराइल), स्टीफेन (अमेरिका), सातो, नावतो, युया (जापान), रफा (स्पेन), ऊल (डेनमार्क), रिने (अमेरिका), सॉवलों (कनाडा) इत्यादि।

आपके पुत्रद्वय श्री धनन्जय कुमार मिश्रा तबला वादन के क्षेत्र में एवं श्री आनन्द कुमार मिश्रा सितार वादन के क्षेत्र में तथा पुत्रियाँ गायन के क्षेत्र में यश प्राप्त कर रहे हैं।

आप एक निरंहकारी किन्तु स्वाभिमानी कलाकार है। इसी वजह से सामान्य जनता और संगीतज्ञों में आपका समान रूप से आदर है। कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जो जनता में बहुत लोकप्रिय होते हैं, किन्तु कलाकार मण्डली में उनकी कला प्रशन्सित नहीं होती। इसके विपरीत कुछ कलाकार ऐसे होते है, जो कलाकार मण्डली द्वारा प्रशन्सित होते हैं, किन्तु जनता उनसे प्रभावित नहीं होती। सरल स्वभाव के धनी, मृदुभाषी, पं0 ईश्वरलाल मिश्र इन दोनों के अपवाद है। एक कलाकार के लिए यह एक बहुत बड़ी इज्जत है कि उसके चाहने वाले कलाकारों की संख्या अधिक है। अभी भी उम्र के इस पड़ाव पर भी पं0 जी मन्च पर तबला–वादन के क्षेत्र में सक्रिय है एवं कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे है।

पं0 ईश्वरलाल मिश्र जी को तबला जगत में अच्छे रचनाकार के रूप में भी ख्याति प्राप्त है। खासकर विषम तालों में आपकी रचित बन्दिश शास्त्रोक्त दृष्टिकोण से पूर्ण तो है ही, साथ ही आपकी बन्दिशों में श्रोतागण जहां सौन्दर्य पक्ष का बोध महसूस करते हैं, वही साहित्य, छन्द एवं अद्भुत लय के भी दर्शन प्राप्त करते है।

21वीं सदी में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों और कम्प्यूटरीकृत संगीत के दौर में तबला जैसे वाद्यों एवं इनके वादकों की मौलिकता के सम्बन्ध में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में पं0 ईश्वरलाल मिश्र जी ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा, 'भारतीय संगीत को किसी भी संगीत से कोई खतरा नहीं है। इसका उपज अंग, सृजनात्मकता और मौलिकता इसका सबसे सबल पक्ष है। इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों और कम्प्यूटर का निर्माण इन्सान ने ही किया है और इनमें जब भी कोई खराबी आ जाती है तो उसे ठीक भी इन्सान ही करता है। इसलिए इन्सान की सोच इन मशीनों से कहीं आगे है। अतः कलाकार जब तक अपनी और अपनी कला की मौलिकता को बचाए और बनाए रखेंगे तब तक कोई उनके समीप भी नहीं आ पायेगा लेकिन अगर कलाकार स्वयं मशीन बनने को तत्पर हो जाए तो उसकी और कला की कलात्मकता भला कैसे बच पाएगी।

'बनारस बाज' के लोकप्रिय और देश के सुप्रसिद्ध तबला वादक वरिष्ठ गुरू पं0 ईश्वरलाल मिश्र सम्प्रति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत एवं मन्च कला संकाय से 31 जुलाई सन् 2004 ई0 में सेवा निवृत्त होकर गुरू–शिष्य परम्परा के अन्तर्गत घराने की विशिष्टता एवं गरिमा के उत्तरदायित्व हेतु शिष्यों

की एक लम्बी श्रृंखला को निरन्तर प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। परन्तु काफी खेद इसी बात का है कि इतने बड़े कलाकार का महत्व एवं सम्मान सरकार नहीं समझ पा रही है एवं इनको जो सम्मान काफी पहले मिल जाना चाहिए था वो आज तक नहीं मिला। सरकार को इस विषय पर जरूर सोचना चाहिए, क्योंकि आप जैसे कलाकार ही भारत के वास्तविक रत्न है जिनसे भारत का एवं भारतीय संगीत का मस्तक पूरे विश्व में गर्व के साथ ऊँचा है।

ईश्वर से हमारी यही कामना है कि इन्हें चिरायु बनावे ताकि एक गुरूदीप से अनेक शिष्यदीप निरन्तर प्रज्जवलित होते रहे।

****